ISSN – 2277-7911
Impact Factor – 5.077
YOUNG RESEARCHER
A Multidisciplinary Peer-Reviewed Refereed Research Journal
Oct-Nov -Dec 2023
Vol. 12 No. 4

भारतीय वस्त्र उद्योग के सतत विकास का भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

डॉ. वीणा कुमारी

(पीएच.डी., नेट)

मगध विद्यापीठ (बोधगया, बिहार)

Corresponding Author: ***डॉ. वीणा कुमारी***

DOI - 10.5281/zenodo.10537395

सारांश:

वस्त्र की सुक्ष्तम इकाई रेशे, रेशे से धागे, धागे से वस्त्र, वस्त्र से परिधान निर्माण तक का विस्तृत क्षेत्र वस्त्र उद्योग के श्रेणी में आता है। हमारा वस्त्र उद्योग तकली से चरखे, चरखे से लूम, पावरलूम और अब E - Textile तक आ पहुँचा है। जिसकी कई सारी खुबियाँ है तो कई खामियाँ भी साथ लेकर चलता रहा है। जिसका प्रभाव हमारे संस्कृति पर निश्चित रूप से पड़ा है। भारत में हमेशा से एक सामासिक संस्कृति रही है। विभिन्न संस्कृतियों के मिलन से वस्त्र उद्योग काफी प्रभावित हुआ है। प्राचीन भारत की अधिकांश अनसिले वस्त्र मध्यकालीन भारत में सिलाई कला के विकसित होने से सिले जाने लगे परन्तु उस समय की अधिकांश वस्त्र ढीलेआते शरीराकारिक बनने लगे जो क्रमशः आगे -ढाले हुआ करते थेायही वस्त्र ब्रिटिश काल आते-ढ़ावा दिया।चलकर रेडीमेट वस्त्रो के प्रचलन को ब इसी के साथ ही लोगों में ड्रेस सेन्स का बोध विकसित होने लगा कब, कहाँ, क्या, क्यों और कैसे पहनना है इसका समझ खास से लेकर आम लोगों में भी होने लगा। परिणाम स्वरूप कुछ अपरिपक्व मानसिकता के लोग फैशन के नाम पर अपनी जरुरतों को समझे बगैर फुहड़ता को अपनाने लगे जिससे अपसंस्कृति को भी थोड़ी बहुत पनाह मिल गई। समय समय पर शिक्षाविदों, समाजिक संगठनों, विधि वेताओं के सामूहिक प्रयास से हमने अपने सांस्कृतिक विविधता को खूबसूरती से संजोये रखा है। विशेषकर आज भी विशेष अवसरों त्यौहार-पर्व), विवाह, सामाजिक संस्कार (अपनी सांस्क पर ृतिक पहचान बनाये रखने के लिए निर्धारित संस्कृति के अनुकूल ही लोग वस्त्र पहनना पसंद करते है। जिसकी एक झलक राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता और गणतंत्रता दिवस पर भी देखा जा सकता है। जहाँ अपनी से ही अपना अपनी राज्यों का प्रतिनिधित्व करता समूह अपने पारम्परिक वस्त्रों-अलग पहचान बनाये रखा है। इसके वावजूद कई क्षेत्रों में वस्त्र निर्माण कला के आदानप्रदान से सामासिक संस्कृति की - झलक मिलती रही है। जैसे कालीन,शॉल,चादर, घरेलू जरूरतों में इस्तेमाल होने वाले वस्त्र एक जैसे हुआ करते थे। विभिन्न संस्कृति हिन्दु), मुस्लिम, सिख, ईसाई, परशियनके लोग उत्साह और उत्सुकता पूर्वक (प्रदान करके नए नए कलाकृतियों का अविष्कार करते। जिससे वस्त्र उद्योग क्रमशः- कलाकारी के आदान

परिष्कृत होता गया । आधुनिक युग के फैशन जादूगर सत्यपाल जी ने प्लेन सिल्क साड़ी में बोल्ड और चटख रंगो के प्रिंट का समावेशकरके अंतराष्ट्रीय बाजार के अनुकूल बना दिया। अब हमारा वस्त्र उद्योग पहननेक्षेत्र लगातार विस्तृत होता ओढ़ने व् घरेलू जरूरतों के सामानों तक सिमित नहीं रह गया है इसका- जा रहा है।Agro tech, Build tech, Geo tech, Mobi tech, Pack tech, Pro tech, Indo tech, Sport tech जैसे क्षेत्रों में भी काफी तेजी से बढ़ रहा है। जो भारत की खूबसूरत सामासिक संस्कृति को भी एकरूपता प्रदान करती है। इसने रोजगार के क्षेत्र में भी बड़ा बाजार उपलब्ध कराया है। नित्य नए अविष्कृत होते कृत्रिम रेशों ने तो वस्त्र उद्योग के उड़ान को पंख दे दिया है।

बिज शब्द: वस्त्र उद्योग, संस्कृति, रेडीमेट वस्त्र, सतत विकास एवं अंतराष्ट्रीय बाजार

परिचय:

विकास और परिवर्तन का अन्योंनाश्रय संबंध रहा है। प्राचीन भारत की कृषि संस्कृति का जब ब्रिटेन की औद्योगिक संस्कृति से मिलन हुआ तो ब्रिटेन के कल कारखानों के सामने तत्कालीन भारतीय वस्त्र उद्योग को घुटने टेकने पड़े। विलायती वस्त्रों का प्रचलन भारत में तेजी से बढ़ने लगा जो प्रतीकात्मक रूप से गुलाम मानसिकता का परिचायक बना। जिसका विरोध हमे आजादी के संघर्ष में भी करना पड़ा। आज हम फिर से अपनी समृद्ध संस्कृति की बारीकियों को समझने का प्रयास करने लगे हैं। मेक इन इंडिया का भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक पटल पर अपने गौरवशाली इतिहास का परचम लहराने लगे हैं।

समीक्षा:

प्राचीन भारत में आरण्यक संस्कृति थी। भारत की अधिकांश जनसंख्या वनों में रहती थी | उनका मुख्य पेशा शिकार करना था। जिससे उनकी दो आधारभूत जरूरतें भोजन और वस्त्र की पूर्ति हो जाती । जानवरों के खाल से बने वस्त्र वल्कल कहे जाते थे। जिसका प्रयोग सिर्फ शिकारी ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक विचारधारा वाले ऋषि मुनि भी ध्यानस्थ होने के लिए करते थे। जैसे जैसे कृषि संस्कृति का विकास हुआ - कपास उगाए जाने लगे| जैविक तंतुओं का विकास हुआ इन्हीं के साथ ही उन्हें बुनने की कला भी विकसित हुई जो तकली, करघे, लूम, पावरलूम से होते हुए कम्प्यूटरीकृत तक आ पहुँचा है। संस्कृति के चार अध्याय नामक पुस्तक में लेखक ने भारतीय (ह दिनकररामधारी सिं) संस्कृति में चार बड़ी क्रांतियों का उल्लेख गहनता पूर्वक किया है।

पहली क्रांति - जब आर्य भारत वर्ष आये और आर्ययेतर जातियों से मिलकर हिंदुओं के वुनयादी समाज का निर्माण किया।

दूसरी क्रांतिमहावीर औ- र गौतम बुद्ध के काल में हुआ जिसे उपनिषद काल के नाम से जानते हैं।

तीसरी क्रांति - जब इस्लाम के विजेताओं का भारतीय हिन्दुत्व के साथ संपर्क 'हुआ।

चौथी क्रांति- जब भारत में युरोपियन का आगमन हुआ।

इन चार अलग अलग संस्कृतियों का - पान-अपना विशेष खान, रहनसहन और - पहनावा रहा ही होगा। जब जब जिन संस्कृतियों- से भारतीय संस्कृति का मिलन हुआ भारतीय वस्त्र और परिधान भी प्रभावित होता रहा। हम यह पाते है की भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों का संगम है जो एक सामासिक संस्कृति का अनुभव कराता है। अतः यहाँ के वस्त्र और परिधान भी एक मिश्रित संस्कृति को प्रतिबिम्बित करता है। इस पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन की सुविधा के लिए इसे हम चार काल खंडों में विभाजित करेगें। पहले काल खंड में भारतीय वस्त्र और परिधान पर हिन्दू संस्कृति का दूसरे काल खंड में इस्लामी संस्कृति का तीसरे काल खंड में ब्रिटिश संस्कृति का और चौथे काल खंड में वर्तमान परिप्रेक्ष्य के आधुनिक (पाश्चात्य) संस्कृति का।

हिन्दू काल - हिन्दू काल में मुख्यतः तीन ही वस्त्रों की चर्चा की गई है। अंतरीय उतरीय और कायबनद्ध । अंतरीय जो सफेद सूत या मलमल जैसे महीन वस्त्र से बने होते थे। इसे कमर से नीचे के हिस्से में लपेटकर या बांधकर पहना जाता था। बांधने का काम रस्सीनुमा कायबन्ध से किया जाता था जिसके आगे एक ढोलकनुमा मुरजा लगा होता था इस पर कढ़ाई भी किए जाने लगे थे। जिसका प्रयोग तब जरूरत के लिए किया जाता था; आज इसका प्रयोग फैशन के रूप में किया जाता है। उतरीय जो कमर से ऊपर के हिस्से को ढकने का काम करता था। इस काल में सिलाई कला का विकास नगण्य था ज्यादातर वस्त्र ओढ़ने, लपेटने या बांधने तक ही सीमित था ।

वस्त्र उत्पादन के पीछे पहनने वालों का जीवन दर्शन भी रहा है जो सात्विक, राजसिक एवं तामसिक प्रवृतियों का परिचायक हुआ करता था। हिन्दू काल के भारतीय शांति प्रिय एवं सात्विक विचारधारा के रहे है जिनका जीवन दर्शन था सादा जीवन उच्च विचार। आध्यात्मिक प्रवृति के लोग ऋषिमुनि), साधु, भिक्षुणी कम (कीमत और सदगीपूर्ण सफेद या केसरिया रंग के वस्त्र धारण किया करते थे। इसी श्रेणी में हिन्दू समाज के विधवाओं का वस्त्र भी सफेद और सादगीपुर्ण हुआ करता था। जो तत्कालीन सामाजिक मूल्यों के अनुरूप वस्त्र परिधान के पीछे एक कठोर जीवन दर्शन को दर्शाता है। राजपुरुषों एवं रानियों के वस्त्र वेशकीमती, चमकीले, भड़कीले एवं चित्ताकर्षक हुआ करता था। जो राजसिक प्रवृति को प्रदर्शित करता था।

सैनिक, संतरी, सिपाही इनके वस्त्र साहसिक प्रवृति का प्रतिनिधितत्व करता था। (तामसिक) इस काल के वस्त्र प्रकृतिक रेशे से ही तैयार किये सूती-जाते थे जैसे, रेशमी, ऊनी इनका नामकरण भी बनाने के वस्तुओं के आधार पर किया गया था।

वल्कल -यह पेड़ के छालों और रेशों से तैयार किये जाते थे। फाल यह कपास के फल के रेशों - से तैयार किये जाते थे।

कौशेय -यह शहतूत के पेड़ों पर पाए जाने वाले बामबिक्स मेरी नामक कीड़ों से तैयार किये जाने वाले रेशम से बनाए जाते थे ।

रांकव -यह पशुओं के बाल से बनने वाले ऊन से तैयार किये जाते थे। इनमें सभी रंगों का समावेश हो चुका था।

महर्षि याज्ञवल्क्य कृत शतपथ ब्राह्मण नामक पुस्तक में अलग अलग देवी देवताओं - को प्रसन्न करने के लिए उनके पसंदीदा रंगों के मंगल के - वस्त्र धारण करने की मान्यता रही। जैसे दिन मातृ स्वरूप आदि शक्ति के लिए लाल रंग का वस्त्र, गुरुवार के दिन देवताओ के गुरु ब्रहहस्पति के लिए पीले रंग का वस्त्र, शुक्रवार के दिन दानवों के गुरु शुक्राचार्य के लिए सफेद या हरे रंग का वस्त्र, राहू, केतु, शनि के लिए काले रंग का वस्त्र धारण करने की मान्यता रही है। वस्त्रों के प्रति ऐसा धार्मिक दृष्टिकोण न मुगलकाल में दिखता है और न ही ब्रितानी काल में परंतु मुगलकाल में मनोदशा के अनुकूल अभिव्यक्ति के रूप में विशेष रंग के वस्त्र पहनने के प्रमाण मिलते है। विशेषकर हुमायू, शाहजहाँ और अकबर के शासनकाल में मुगलों का दर्शन अलग रहा है। उनका दर्शन रहा है की एक ही जन्म मिला तो इसका भरपूर आनंद उठान चाहिए जो विलासितापूर्ण दर्शन को प्रतिविमवित करता था। अतः इस काल में वस्त्र और परिधान के क्षेत्र में काफी कुछ विकास सिलाई कला के विस्तार से लेकर कढ़ाई कला में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों के मिलन से कई नई हुआ। किस्मों का आविष्कार हुआ। जैसे ढाका का मलमल- (नयनसुख), वनारस के वनारसी ब्रोकेड, पटका, यार पिनाह -, चिकनकारी, नूरमहली, फुलकारी कढ़ाई इत्यादि ।

अब तक मौसम के अनुकूल वस्त्र गर्मी) के लिए सूती, रेशमी ठंढ के लिए ऊनी भी (बनाए जाने लगे थे। डॉसतीश चंद्र ने . राजनीति : मध्यकालीन भारत, समाज और संस्कृति नामक पुस्तक में लिखा है की इस काल तक भारत में वस्त्र उत्पादन का इतना (मुगल) विकास हो चुका था की भारतीय वस्त्र का निर्यात यूरोप में होने लगा था। भारत का वस्त्र बाजार काफी विकसित हो चुका था। इस वि◌कसित बाजार पर जब ब्रिटिश शासकों का दृष्टि गई तो उनकी ललचाई नजरों से भारतीय बाजार अपने को बचाने में असमर्थ रहा। ब्रिटेन में हुए

औद्योगिक क्रांति से बड़े बड़े मशीनों का आविष्कार हुआ जिसपर शीघ्रता से वस्त्र बनाए जाने लगे जिसके आगे भारत के समृद्ध बाजार व्यवस्था को घुटने टेकने पड़े। वे भारत से सस्ते दामों पर कच्चे माल खरीदकर उससे उत्पादित वस्त्र भारत के ही बाजार में अधिक कीमत पर बेचने लगे जिससे लघु एवं मँझोले उद्योग धंधे लगभग बंद के कगार पर आ गए।

पाश्चात्य देशों का दर्शन उपयोगितावादी रहा है। अतः इस काल में हुए वैज्ञानिक प्रगति आवश्यकतानुरूप वस्त्रों का निर्माण पर विशेष वल दिया जाने लगा। नये नये रासायनिक पदार्थों के ज्ञान ने वस्त्र एवं परिधान के क्षेत्र में क्रांति ला दिया। विज्ञान की प्रगति की स्पष्ट छाप आधुनिक वस्त्रों पर दिखाई देने लगा इसके साथ ही साथ वस्त्रों के उपयोग और चयन में विकल्पों की बहुलता होने से धीरे धीरे लोगों में ड्रेस सेन्स का - बोध विकसित होने लगा। सामाजिक, पारिवारिक, व्यवसायिक, मौसम, विशेष समारोह और वर्गों के अनुरूप वस्त्र बनने लगे। जैसे घर पर पहने जाने वाले दिनअलग वस्त्र- रात के अलग-, कार्यस्थल पर कार्यनुरूप वस्त्र (यूनिफाम), उत्सवों में चटकदार रंगों के आकर्षक वस्त्र, दुखद परिस्थितियों के शांत और सफेद रंगों के वस्त्र, धार्मिक अनुष्ठानों के लिए लाल, पीले या केसरिया रंग के वस्त्र धारण करने की अवधारणा का विकास होता गया।

जब वस्त्रों में इतनी विविधता का समावेश हो गया तो उनका देख-रेख और रख-रखाव का भी विशेष ध्यान देने की जरूरत ने धुलाई कला को विकसित किया। कई रासायनिक रेशों से बने वस्त्र को शुष्क धुलाई की भी आवश्यकता होने लगी जो व्यवसायिक तौर पर के (क्लिनिक - ड्राई) बड़े धुलाई संस्थान-बड़े रूप में बाजारव्यवस्था को समृद्ध किया।

हिन्दू काल में अनसीले मुस्लिम काल में सिले वस्त्रों का अंतर था। परंतु दोनों ही कालों में वस्त्र बनाने के बारीक और नायाब तरीके उसपर खबसूरत नमूने से कशीदाकारी और जरी का काम चरमोत्कर्ष पर था । सारे काम कुशल कारीगरों के नेतृत्व में किए जाते थे जिस पर उनके उगुलियों के जादुई प्रभाव अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करता था । एक एक वस्त्र को - कई कारीगरों के सामूहिक प्रयास से -बनाने में कई भी कई महीने लग जाते थे। फिर भी तत्कालीन शासकों के द्वारा उचित कीमत मिल जाने से उसमे बनाने वालों का उत्साह बना रहता था।

अंग्रेजों के आगमन और औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप हुए मशीनीकरण से कटाईसिलाई -, कढ़ाई, रंगाई, निटिंग आदि के तकनीक और भी उन्नत और विकसित तो हुए पर हमारा समृद्ध वस्त्र कला धीरेधीरे अपनी पहचान - खोने लगी। वस्त्रों की भव्यता की जगह वस्त्र ढाले वस्त्र की -लगे। साथ ही ढीले सपाट बनने

जगह शरीराकारिक बनने लगे रेडिमेट वस्त्रों का चलन तेजी से बढ़ने लगा। अब तक हम जहाँ सिर्फ दर्जियों से कपड़े वनवाया करते थे उसकी अधिकाश जगह रेडीमेड वस्त्र ले चुका था। इसकी सहज सुलभता, समय की बचत और विकल्पों की बहुलता लोगों के लिए सहज स्वीकार्य हो गया। जिसका असर सिर्फ बुनकरों तक ही सीमित न रहकर दर्जियों को भी प्रभावित किया। विदेशी वस्त्रों का भारतीय बाजारों में इतना विस्तार हो चुका था की अपनी खोती जा रही पहचान को वापस लाने के लिए उसका विरोध ही नहीं बल्कि कडा संघर्ष भी करना पड़ा।

आज का वर्तमान युग सभ्यता और संस्कृति के समन्वय और समागम का युग है। इसलिए वस्त्रों और परिधानों के स्वरूप में भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है। आज हम रेशों की प्राप्ति और उससे बने वस्त्रों तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि उसकी संरचना और संरचनाओं में समिश्रण करके नयेनये अनुसंधान किए जा रहे - है। जैविक तंतुओं की जगह रासायनिक तन्तु की कापोक) भरमार हो गई है। कई ऐसे रेशों, पटसन, लिनन, सीसल, पिना, नायलन, एक्रिलिक, पालिस्टर, कटसवूल, फाइवर ग्लास, रेयन का (आविष्कार किया जा चुका है जिसने उसकी उपयोगिता को सहज और सरल बना दिया है । इसमे रेयन गया है । का आविष्कार एक चमत्कारी आविष्कार है। जिसका विस्तार वस्त्र के अधिकांश क्षेत्रों तक तकन ीकी का समावेश भी इस क्षेत्र को और उन्नत बना रहा है। आत्म निर्भर भारत, कुशल व कौशल भारत, मेक इन इंडिया जैसे आह्वान ने लोगों में एक नई ऊर्जा और जोश भर दिया है। कई स्टाटअप कंपनियाँ भारत की विलुप्त होती परंपरागत वस्त्र कलाओं को अनुसंधान, आविष्कार, तकनीक, कुशल, कौशल मैनपावर के सहयोग से उसे पुनर्जीवित करने का काम कर रही हैं। जैसे मुर्शिदाबाद के बालूचरी साड़ियाँ, पटोला, बनारसी, चंदेरी, मधुबनी कढ़ाई, इन्हे साड़ियों के सीमाओ से पार अन्य वस्त्रों तक विस्तार दे रहें हैं । प्लेन सिल्क साड़ियों में चटक रंगों का समावेश करके अन्तराष्ट्रिय बाजार के अनुकूल बना रहें हैं। वस्त्रों में एल ई डी बल्व के प्रयोग से धारण करनेवालों के मनोदशाओं को भी प्रदर्शित कर रहे हैं । इन कुशलताओं को हमने कोरोना काल में भी बखूबी महसुस किया की जब भारत ही नहीं विश्व भर में सारे उद्योग धंधे बंद हो गए। वेरोजगरी और भुखमरी अपने चरम पर था। तब भी हमारा वस्त्र उद्योग मास्क, पी पी ई कीट, चिकित्सीय जरूरतों के अनुकूल वस्त्र निर्माण करके सुरक्षा के साथ-साथ बड़े पैमाने पर रोजगार भी उपलब्ध कर रहा था। तब इस पर न तो कोई जाती, धर्म, वर्ग, अमीरगरीब या संस्कृति का प्-रभाव था बल्कि एक नई प्रवृति आहिस्ताआहिस्ता जन्म ले रहा - र्फ मानवता वादी। एक था। वो था सिर्फ और सि

ही लक्ष्य की ओर हर हाथ बढ़ रहा था। कैसे जिंदगियों को बचाया जाय और फिर से बसाया जाय। इससे पहले एक विशेष समुदाय के लोग (जैनही अपना मुहँ मास्क से ढका करते थे। प (रंतु अब यह हमारे जीवन का हिस्सा बन गया है। यह हमारे ड्रेस का मेचीग सह अलंकरण भी बन गया है। इस पर कलाकृतियाँ भी उकेरी जाने लगी है।

इस कोरोना काल में मजबूरी में शुरू हुई डिजिटल प्लेटफार्म पर आनलाइन मार्केट अब हमारे जीवन का सामान्य हिस्सा बन गया है। मशीनीकरण के परिणामस्वरूप जो भारतीय बाजार को घुटने टेकने पड़े थे यहाँ स्थितियाँ विपरीत हो गई। बाजार का सरलीकरण हो गया अब प्रत्येक व्यक्ति के पहुँच के अंदर है बाजार। जहाँ से वे अपनी जरूरतों के हिसाब से कच्चे माल खरीद भी सकते है और उत्पादित माल घर बैठे बेच भी सकते हैं। जहाँ उत्पादित वस्त्रों की पूरी जानकारी उसके बनाबट से लेकर प्रयोग करने और रखरखाब के सुझाव सहज ही उपलब्ध - होते है। जिससे हमारा समय, श्रम, धन की बचत तो होता ही है बिचौलियों के हस्तक्षेप नहीं होने से हमे उचित मूल्य भी मिल जाते हैं।

अब हमारा वस्त्र उद्योग परिधान और घरेलू जरूरतों से बहुत आगे निकल चुका है। इसका क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया है। जीवन के हर पहलू चाहे वह कृषि क्षेत्र हो, भवन निर्माण, खेल, सुरक्षा या जोखिमपूर्ण कार्य ही क्यों न हो इन सब तक इसकी पहुँच हो गई है। इसे थोड़ा विस्तार से जानते हैं।

Agrotech -इसके अंतर्गत कृषि से संबंधित क्षेत्रों में सुरक्षात्मक सतह प्रदान करने के लिए कई तरह के नेट्स बनाए जाते हैं। जैसे -Bird protection Net, Plant Net, Monofil net, Root Ball Net, Insect protection Net, green house thermoleum इत्यादि।

Buildtech- इसके अंतर्गत पॉलिथीन, कॉटन और जुट का त्रिपाल बनाए जाते हैं जिसका प्रयोग परिवहन क्षेत्र, गोदामों में अनाज संग्रह, निर्माण स्थल, नावों, इत्यादि को वर्षा जल से संरक्षण के लिए किया जाता है।

Ciothtech-इसके अंतर्गत कपड़ों और जूतों में उपयोग किये जाने वाले घटक के रूप में प्रयोग होने वाले उत्पाद बनाए जाते हैं। जैसेजीपर -, जूते के फीते, इलास्टिक, सिलाई धागे, इंटरलॉकिंग कलोथस लैस), गोटा, झालर लेबल इत्यादि। (

Geotech -इसे भू टेक्सटाइल भी कहा जाता है। - सड़क और सुरंगों के निर्माण तथा नदी, समुद्र तट पर पानी के बहाब को रोकने हेतु बनाये जाने वाले स्थाई और अस्थाई आवागमन के साधनों में प्रयुक्त होने वाले उत्पाद का निर्माण इसी क्षेत्र के अंतर्गत आता है। जिसमे विना बुने हुए शीट का प्रयोग किया जाता है।

Hometech -इसमे घर में प्रयोग होने वाले वस्त्र जैसेदरी -, कालीन, पर्दा, बेडशीट, तकिया, मछड़दानी इत्यादि आते हैं।

Indutech -इसके अंतर्गत औद्योगिक क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले उत्पादों का निर्माण किया जाता है। जैसेप्रिंटर रिवन-कंप्यूटर -, सर्किट बोर्ड, सिगरेट फाइवर, एयर बैग, रस्सी, गैसकेट और फिलटरेशन प्रोडक्ट आते हैं।

Meditech- इसके अंतर्गत स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले सुरक्षात्मक उत्पाद बनाए जाते हैं। जैसे -Surggical Products, ऑक्सीजनपाईप, कॉन्टैक्ट लेंस, मास्क, डायपर, एप्रन, दस्ताने इत्यादि । Mobitech -इसके अंतर्गत गाड़ी मोटर, रिक्शा, साइकिल, ट्रेन, जहाज, इत्यादि में प्रयोग होने वाले टायर इंजन, शीट व शीट कवर, छननी इत्यादि उत्पाद बनाए जाते हैं।

Packtech - इसमे सामानों के पैकेजिंग के लिए प्रयोग किए जाने वाले उत्पाद बनाए जाते हैं। जैसेबड़े थैले -छोटे -, चाय कॉफी बैग, फलों, सब्जियों का जालीदार कवर इत्यादि।

Protech-इसमे व्यक्तियों के लिए सुरक्षात्मक उत्पाद तैयार किए जाते हैं। जैसेफायर प्रूफ -, वाटर प्रूफ, बुलेट प्रूफ जैकेट्स, स्पेश सूट, सेनाओ के वर्दी, हेलमेट, प्रयोगशालाओं में पहने जाने वाले सुरक्षतक वर्दी आते हैं।

Sporttech -इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकारों के खेलों से संबंधित उत्पादों का निर्माण किया जाता है। जैसेटेनिस नेट -, बैडमिंटन रैकेट, फूटबॉल नेट, स्विमिंग सूट, स्पोर्ट वियर कपड़े इत्यादि आते है। इस प्रकार हम पाते हैं की भारतीय वस्त्रों के विस्तार से जीवन पहले से अधिक सरल हो गया है।

निष्कर्ष:

हम अपने शोध अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं की भारतीय वस्त्र एवं परिधान के विकास में निरन्तरता एवं परिवर्तन का एक निश्चित स्वरूप है। भारत में कई विदेशी आक्रान्ताओ ने अपना साम्राज्य स्थापित किया। परिणामस्वरूप भारत का हिन्दू संस्कृति एक सामासिक संस्कृति के रूप में विकसित हुआ जिसका प्रभाव वस्त्र विकास पर निश्चित रूप से पड़ा है। विशेषकर आधुनिक भारतीय वस्त्रों पर पश्चात वेश भूषा और वैज्ञानिक जीवन शैली का वावजूद इसके कुछ पारंपरिक वस्त्र साड़ी), धोती, चादर, पगड़ी, कायबन्ध सामासिक संस्कृति में (समय-विलुप्त नहीं होकर समय पूर्णतःपर संशोधित एवं परिवर्धित होते रहे हैं। जिसमे विकास की आपार संभावनायें छिपी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. दिनकर रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय।

2. यागंवल्क्य महर्षि, शतपथ ब्राह्मण |

3. सिन्हा रामसवारी, मुगलकलीन उत्तर भारत के वस्त्र एवं परिधान।

4. चंद्र सतीश, मध्यकालीन भारत राजनीति :, समाज और संस्कृति।

5. कुमारी वीणा, भारतीय वस्त्र एवं परिधान के उद्भव एवं विकास का एक समीक्षात्मक अध्ययन।